बेजुबान

डॉ. ब्रह्मदेव शर्मा

नहीं, ऐसा नहीं कि हम कभी बोलना ही नहीं जानते थे, पर हाँ आज हम बेजुबान हैं।

कहीं आप बेजुबान का यह मतलब न लगा लीजिए कि हम बेबस हैं, हमारा कोई सुनने वाला नहीं है। बहुत लोग आते हैं, हमें अजीब-अजीब बातें बताते हैं- मुझे तो एक बहुत बड़ी जगह भी ले गये थे। कौन-सा शहर था, नाम भूल गया, वहाँ आदमी ही आदमी थे। मुझे तो चलना ही मुश्किल था। हाँ, बड़े-बड़े मकान थे। बिजली, रोशनी और न जाने क्या-क्या था ! मैं तो घबरा गया था। एक दिन एक साहब पूछ रहे थे कि क्या तुम भी बड़े-बड़े मकान बनाओगे ? मैंने तो सीधो से कहा कि किसलिए? पर मालूम नहीं उन्होंने क्या समझा, कुछ बुरा मान गये ! हाँ और फिर तो वे गुमसुम ही हो गये।

एक दिन साहब एक बात और पूछ रहे थे-‘ तुम्हारे यहाँ धाान क्या भाव बिकता है ?’ मैंने कह दिया कि ‘धाान कोई बेचने के लिए होता है!’ इस पर तो वे बहुत हँसे। पर आप ही बताइए, इसमें हँसने की कोई बात थी क्या ? खैर......... अपनी-अपनी मर्जी, हमने तो फिर उनकी बातों का जवाब देना ही छोड़ दिया। हम बिन पढ़े-लिखे जंगल के आदमी ठहरे, बात करने का तरीका भी नहीं मालूम। न मालूम किस बात पर आप लोग नाराज हो जाओ। अच्छा यही है चाहे समझ में आये न आये, हम हाँ करते रहें। इसमें कोई नाराज नहीं होगा। भगवान जाने आप नाराज हो जाओ और हम किस चक्कर में फँस जायें उस दिन तो जब तक साहब टिके रहे

बस हमने किसी तरह राम-राम करके अपनी खैर मनायी। माटी माता ! ऐसी मुसीबत फिर कभी न देना-हम अपने जंगल में ही भले हैं।

अच्छा हुआ, आप आये हैं। आप कहते हैं कि हम अपनी बात क्यों नहीं कहते ? बात असल में यह है कि हम गँवार हैं, अपनी बात किसी को समझा नहीं पाते हैं। हमारे यहाँ एक गुरूजी आये थे। खूबे द्धबहुतऋ दिन रहे यहाँ। अभी भी शाला है, कभी-कभी आते हैं। पर वे भी हमारी बात नहीं समझते हैं। स्कूल में मेरा नाम लिखाया था मेरे बाबा ने, न जाने कितना रटा था पहली किताब को। एक पाठ था-'हरे रंग का है यह तोता।' हमारी तो समझ में कुछ नहीं आया। मेरा भाई, हाँ यही मगड़ू वह तो कभी स्कूल गया ही नहीं। एक दिन उसने पूछा कि आज क्या पढ़ा था तो हमने बताया था कि ' हरे रंग का है यह तोता ' पढ़ा था। उसने कहा 'क्या होता है यह तोता ?' मैंने कहा, 'क्या मालूम ?'

मैंने उससे पूछा कि 'तुमने क्या किया ?' बोला- ओह, आज तो खूब मजा आया-खूब नाचे

थे-रेलों रे रेलों गाया था और हाँ, एक मूसा देखा तो वह खरगी की जड़ के पास बिल में घुस गया। टँगिया लेकर पेड़ काटा। अरे वह तो अलग मैं दबते-दबते बच गया। गड्ढा खोदा, पकड़ ही तो लिया और फिर उसे भून कर......... अरे देख क्या रहा है ? हाँ, और फिर नाचे, खूबे नाचे, इतना नाचे कि गिर ही गये। खूब देर बरिया घूमर द्धप्रपातऋ के पास बैठे रहे। पाको भी खूब हँस रही थी। हम तो बातें करते-करते भूल ही गये थे। वह सुधारी, बड़ी शैतान है। चुपचाप आकर मेरे पीछे बैठ गयी और पाग लेकर भाग गयी। मैं उसके

पीछे भागा। सामने देखा। केव-केव- केव-केव करते हुए रूपा द्धतोता, गोंड़ी बोली मेंऋ का झुंड निकला। कितने भले थे। इतने रूपा एक साथ कभी नहीं देखे होंगे। अपने घर जा रहे थे। पाको ने भी कहा घर चलो न.........हँसते-खेलते भाग आये। आज तो बहुत ही मजा आया और तू यह क्या पढ़ रहा था 'हरे रंग का है यह तोता।' भगवान, मैं तो उस दिन से स्कूल गया ही नहीं और आप कहते हो कि स्कूल जाते तो बोलना सीख जाते। आप ज्यादा जानते हैं। हम क्या जानें?

आप हमारी कहानी सुनना चाहते हैं । यदि मैं यह पूछूँ कि 'किसलिए?' तो बुरा मत मानना। हमारा गाँव तो सड़क से बहुत दूर है इसलिए बहुत कम लोग आते-जाते हैं। हाँ, आप सरीखे एकाधा अगर पैदल चलने की हिम्मत करें तो यहाँ पहुँच पाते हैं। ये आप जो सड़क देखते हैं न, वह बहुत पुरानी नहीं है। अभी अंकाल द्धअकालऋकी साल में बनी है। हमें पेट भरने को मजदूरी मिल गयी। पहले हमारा गाँव वहीं था। साहब लोग आये थे। कहा था कि हमको मजदूरी भी मिल जायेगी और सड़क भी आ जायेगी। हमारे गाँव के पास से सड़क निकाली गयी। एक दिन, उसको क्या कहते हैं, हाँ उद्घाटन, उद्घाटन हुआ, खूब लोग जमा हुए। कोई लोग तो खूब बोले-सड़क आ गयी है, तुम लोगों के भाग खुल गये, अब तरक्की होगी, सब लोग अब आगे बढ़ेंगे। सबने तालियाँ बजायीं, उनको देख कर हमने भी तालियाँ बजायीं। मुझसे बोलने को कहा गया तो मैंने भी कहा कि 'हम मन चो भाग आसे कि तुइ सब मन एता इलस' द्धहम लोगों के भाग्य हैं कि आप सब लोग यहाँ आये हैं।ऋ भइया, ज्यादा तो नहीं बोल पाया, मैं तो इतनी बात कह कर वहीं ताली बजाने लगा-मालूम नहीं कुछ लोग हँसने लगे। मैं भी हँसा और ताली और भी जोर से बजाता रहा।

हाँ, तो उसके कुछ दिन बाद हमारे गाँव वाले नहीं माने और वहाँ से अपनी बस्ती यहाँ ले आये। सड़क क्या आयी, हमारी तो मुसीबत ही आ गयी। जो देखो सो हमारे यहाँ आने लगा। कभी कोई साहब, तो कभी कोई ठेकेदार और बाबू हम तो

किसी को चीन्हत नाहीं। आमचे बाट सप्पाय बरिया साहब आसत द्धहमारे लिए तो सभी बड़े साहब हैं।ऋ। हमारे गाँव माँ आप दसठन हों दसठन तो घर है, किस की बात मानें और किसकी न मानें । साहब लोग आते हैं, कोई कुछ माँगता है, और कोई कुछ। किसी की गाड़ी खराब हो जाती है, तो रात को ही गाँव के गाँव को उठना पड़ता है। रूपये तो देते हैं, पर हम क्या करेंगे रूपये का? और एक बात हमें अच्छी नहीं लगती। जो देखो सो हमारे गाँव में इधार-उधार घूमता है। बाबू आप के यहाँ भी ऐसा ही होता है क्या ? मैं जगदलपुर गया था, वहाँ तो हमें अपने घर कोई घुसने नहीं देता पर हमारे घर में कोई दरवाजे तो हैं नहीं। सब खुले ही हैं।

हमारे यहाँ तो शाम हुई और लड़के-लड़की अपने खेत में निकल गये। खूब रात गये तक नाचते हैं, गाते हैं। बाबू हमारे यहाँ सब लोग मद पीते हैं-शादी-ब्याह, मरनी कभी-कभी बाजार जाकर भी पीते हैं पर आजकल का रिवाज हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता। उस दिन हम बिरंगपाल गये थे ,वह है न सड़क के किनारे का गाँव। वहाँ तो खूब बाहर से लोग आते हैं। नाच देखते हैं और वहाँ के लोगों को तो जगदलपुर भी नाचने के लिए बुलाते हैं। हमारे यहाँ लड़के हमारे सामने मद नहीं पीते, पर वहाँ तो उस दिन लड़कों ने हद ही कर दी। अब तो किसी का लिहाज ही नहीं रहा। एक और बात हुई है। नये छोकरे तो वहाँ अब नाचने से ही पैसा कमा लेते हैं। आप ही बताओ, यह भी कोई तरीका है, खेती सब बूढ़ों के पल्ले हो गयी। हमने तो उस दिन कह दिया कि अभी नाच लो और हमारी बात मत मानो, पर आना खेती पर ही होगा। जिन्दगी भर थोड़े ही नाचते रहोगे। जब समय होता है तब सब नाचते हैं। मड़ई जाते हैं तो रात-रात भर नाचते हैं, चाँदनी रात में भी नाचते हैं पर ऐसा तो नहीं होता कि मौके बेमौके जब भी कोई बाहर वाला आ जाये तो नाचो और फिर वह पैसा और मदे, हमें तो अच्छा नहीं लगता।

हमें तो सड़क पसंद नहीं आयी। हम जंगल के आदमी ठहरे। गाँव में कोई रहता है, नहीं भी रहता है। खेती के दिनों में डौकीमन द्धस्त्रियाँ़, सुअर, मुर्गी रखाने के लिए अकेली ही रहती हैं । उस दिन पंचायत हुई कि हम सड़क पर नहीं रहेंगे। हम यहीं दो साल हुए चले आये। वह रास्ते में जो एक झोपड़ी है न, जिसमें बहुत से केले के पेड़ हैं, वह मेरी झोपड़ी थी। आपने देखा होगा झोपड़ी तो अब टूट गयी। पर इस साल केले खूब आये......... छोडो भी उस बात को, इस जगह आराम है। किसी की बेगार का कोई डर नहीं।

अब आप कहें तो एक बात मैं भी पूछूँ। साहब, आप क्या करते हो यह सब पूछ कर? पहले साहब आये थे, कोई बहुत बड़ा काम कर रहे थे। हमारी तो कुछ समझ में नहीं आता। आप लोगों के यहाँ बड़े-बड़े काम क्या होते हैं ? हमने तो एक साहब को देखा घन्टों कुछ लिखते थे। जाने क्या करते रहते हैं। हम तो एक मिनट बैठ नहीं सकते। अरे, बात करो, हँसो, खेलो-कूदो, नाचो-गाओ। यह क्या कि चुपचाप बैठे हैं! आप लोगों की बात हमारी तो समझ में नहीं आती।

अरे, मैं इधार-उधार की बात करने लग जाता हूँ तो जो साहब आये थे न, उन्होंने कहा था कि खूब बड़ी किताब लिखेंगे। हमारे छापे द्धफोटो़ उतारे थे। मेरी तो तभी शादी हुई थी। बड़े अच्छे आदमी थे। उस दिन शाम को सबके लिए खूब मद मँगा दिया था। मद पीने के बाद तो फिर रात भर ही हम लोग नाचे थे। रेलों रे रेलों रेलों बाबू पूनी द्धपूर्णिमा़ थी उस दिन और मनकू का ढोल। बाबू उस ढोल की आवाज कान में पड़े तो रुका ही नहीं जाता। आप कहते हो कि क्या जादू है ? वह हम नहीं जानते, परन्तु कुछ ऐसा होता है कि सब छोड़ कर हम उसी की ओर भागते हैं। उस दिन भी खूब ही छापा लिये हम मनके। मालूम नहीं क्या किया उनका फिर साहब ने। सबेरे हमको रूपये भी दिये। हमनेफिर भूमिकाल द्धसामूहिक कार्यक्र

में खर्च किये। एक बड़ा सुअर मँगाया था। मेरी डौकी का छापा आयेगा तो यहाँ इसी लकड़ी पर लगा दूँगा। मालूम नहीं, साहब भूल गये होंगे.......... पर नहीं, बड़े अच्छे थे साहब। छापा भेजेंगे वे जरूर।

पीढ़ी दर पीढ़ी से यही जंगल हमारा घर है। बाप-दादों के जमाने से यह जंगल हमारा ही है। बहुत दिन की बात है हमारे पिता के जमाने की। खूबेझन द्धबहुत लोगऋ यहाँ आये थे। उन्होंने कहा था कि यहाँ बड़े अच्छे पेड़ हैं, कटवाकर बाहर भेजेंगे। उन्होंने यह भी बताया था कि यह जंगल महाराज का है। पहली बार सुनी थी यह बात। सरकार की बात हमें क्या मालूम महाराज तो थे ही, हम पट्टी भी पढ़ाते रहे। दशहरा पर टीका भी देते रहे। पर यह नहीं मालूम था ? कि जंगल हमारा नहीं है......... हमारा नहीं तो महाराज तो थे ही, हम पट्टी भी पढ़ाते रहे। दशहरा पर टीका भी देते रहे। पर यह नहीं मालूम किसका है ? हमारे दादा ने कहा था कि अगर जंगल महाराज का है, तो वे आकर यहाँ रहें, खेती करें। हमारे यहाँ तो कोई भी आकर रह सकता है। पर साहब ने बताया रहने के लिए नहीं , अरे यह लकड़ी बहुत अच्छी है, उसे वे कटवायेंगे। बाबा ने कहा था, बहुत जंगल है कटवा लो उसमें क्या है। पर साहब बता रहे थे कि हम लोग जंगल जलायें नहीं। पर यह नहीं बताया खाने को क्या होगा? और यहाँ तो ऊँची-ऊँची बागड़ नहीं लगाए तो जानवर एक पौधाा भी नहीं छोड़ेंगे। और जानवर सुअर-मुर्गी को भी उठा ले जायेंगे। आजकल भी साहब लोग आते हैं, बताते हैं, यह लकड़ी बड़ी कीमती है। पर हम रुपये का क्या करेंगे? हम अपने लिये वंजी द्धधाानऋ, सरसों, तंबाकू इसी खेत में पैदा करेंगे ? उस दिन मैंने इस सगौना द्धसागौनऋ के पेड़ को काटा था, एक बाड़ी के लिए। कितना लम्बा और मोटा था। एक कुल्हाड़ी मारने से ही फट जाता है और पट्टियाँ लम्बी-लम्बी निकलती हैं। बीजा द्धएक पेड़ऋ में तो दिन भर काटो तो भी वह बाड़ी नहीं लगती। हम तो

अपने खेत में सगौना की ही बाड़ी लगाते हैं।

हाँ, तो बाबा बताते हैं कि साहब ने कहा कि सगौना के झाड़ कटवा कर भेजना है, बाहर और फिर सगौना के पेड़ भी लगवाने हैं, बाबा ने तो मना कर दिया कि हमारे तो माटी देव यहीं हैं और हम तो दूसरी जगह नहीं जायेंगे। पर साहब नहीं माने। साहब चले गये तो बड़ी पंचायत हुई। पूरे परगना के मांझी आये थे। सबने कहा कि सरकार को सगौना चाहिए काट लें, पर हम अपने देव को कैसे छोड़ेंगे। और अगर सरकार नहीं मानती है तो हम सब उड़ियान द्धउड़ीसा राज्यत्रऋ चले जायेंगे। द्धकहते हैं कि साहब लोग कई बार आये और हमारे गाँव भी रिजर द्धरिजर्व फारेस्ट- आरक्षित वनत्रऋ हो गया था। आस-पास के गाँव तो हट गये, पर हमारे बाबा ने कह दिया कि हम तो यहीं मरेंगे, नहीं हटेंगे। सब मांझियों ने सलाह की। इसी गाँव के पास एक चौकी थी। सबने मिलकर सब सरकारी लोगों को वहाँ से भगा दियात्रऋ पहले तो बाबा ने उनसे अच्छी तरह कहा तुम लोग चले जाओ, पर वे नहीं माने और एक ने तो बाबा को गाली दे दी। बाबा कहते थे कि फिर उनको मार के भगा दिया। उसके बाद एक साहब आये, कहते हैं कि बरिया साहब थे। उन्होंने मांझीमन से बात की। कहते थे कि तुमने बलवा क्यों कर दिया, कोई बात थी तो हमसे तो कहते?

आपने भी अच्छी बात कहीं-जंगल में हमें डर नहीं लगता ? हम अभी यही पूछ रहे थे कि बाबू आपको इतनी बड़ी मोटर, इतने बड़े-बड़े टरक कोई इधर से आया पों पों, कोई उधार से आया खर्र.......... आपको डर नहीं लगता ? हम तो दो दिन में तंग आ गये थे और मुझे तो कोई हांडी भर के भी मद रोजाना दे तो भी वहाँ एक मिनट नहीं ठहरूँ। कल देखा था न आपकी दूर से मोटर आ रही थी-कैसी भगदड़ मच गयी थी पेका-पेकीमन में द्धलड़के-लड़कियों मेंत्रऋ। सब कैसी लेन से जा रहे थे। जब एकदम आवाज सुनी जंगल में भाग गये थे और आपके यहाँ तो लोग निडर ऐसे हैं कि सड़क पर खड़े रहेंगे। सुनते ही नहीं, मानो जिन्दगी का कोई डर नहीं।

ये पेड़ आप देख रहे हैं, हमारे बाबा का लगाया हुआ था और मैं तो इस जंगल में हर पेड़ को पहचानता हूँ, हर एक पेड़ को। इस आम का फल कितना मीठा होता है कि बच्चे उन्हें कच्चे ही तोड़ कर खा जाते हैं और यह आम, यह भादो तक फल देता है और उस पेड़ को देखो, कितनी बड़ी स्याही की लता चढ़ी है। जब मैं छोटा था, तो बड़ा नटखट था। बन्दर की तरह चढ़ जाता था। एक दिन इस स्याड़ी पर से पैर फिसला, मर ही गया होता। पांडू गुनिया ने जान बचायी और यह महुआ का पेड़, इसी महुआ के पेड़ के नीचे ककसाड़ के नाच में ये सुधारी मेरा कंघा छीन कर भाग गयी थी और जाकर पेड़ के पीछे छिप गयी। फिर वहीं बैठ कर खूब देर तक खूब बात की। उसी दिन तो वह पहली बार हमारे गाँव में नाचने आयी थी!

आप नहीं समझेंगे बाबू, आप नहीं समझेंगे नहीं समझेंगे। ये पेड़ हमारे दुःख में रोते हैं। हमारे सुख में हँसते हैं। चाँदनी रात, ककसाड़ नाच में पेड़ भी झूमते हैं और ये बाँस के कुंज मस्ती में आकर हमारे साथ गाते हैं-के के रो के रो........।

देखो वह लड़की कैसे पेड़ के पीछे खड़ी झाँक रही है आपको ? लाख समझाने पर इसकी समझ में आता ही नहीं। बाहर का आदमी देखा और भागी जंगल में। अरे, कोई सभी एक से थोड़ी होते हैं, पर नहीं वह तो कहती है कि हमें डर लगता है। आदमी से डर लगता है कैसे समझाऊँ। आदमी से डर लगता है, जंगल से नहीं। आप चुप क्यों हो गये ? जंगल की बात आपको अच्छी नहीं लगी ? चलिए तो फिर कहीं और घूम आयें-चलिए.........।

ये रास्ता बेड़मा पदर को जाता है। फूल पदर के पहले हमारे बाप-दादे बेडमा पदर में ही रहते थे। शेरखोरी के कारण वहाँ से हट गये थे। अभी भी माटी देव की पूजा करने वहीं जाते हैं।

ये हमारे गाँव के गाता कल्क द्धपत्थर के बने मृतकों के स्मृति चिन्हऋ हैं।

ये सबसे बड़ा पत्थर हमारे बाबा के बाबा बोड़ा का था। दस कौड़ी द्धदो सौऋ लोग लगे थे। चार दिन खोजने के बाद तो वह पत्थर मिला था। बताते हैं कि मांझीपन तो और भी बड़ा पत्थर चाहते थे, इससे दूना, सत्तर के बलवे में बोड़ा ही तो मुखिया थे।

आपको नहीं मालूम। बाबा बताते थे कि पूरा जगदलपुर घेर लिया था, तीस हजार मुरिया थे। भला मजाल कि कोई बाहर चला जाये या अन्दर आ जाये। हाँ, उनसे पूछकर दारू द्धलकड़ीऋ, चाउर और जरूरत की चीजें ले जा सकते थे। कोई दुश्मनी तो थी ही नहीं कि भूखों मारते। हमारा ही तो राजा था। उनका तो यह कहना कि दीवान को हटा दो। उसके लिए राजा माने नहीं। हमारे परदादा बोड़ा ने मिर्च और आम की डगाल घुमा दी थी। तीन दिन में सब मुरिया इकट्ठे हो गये थे।

दीवान ने तो हद ही कर दी थी। राजकाज तो चलाना ही होता है। अब हम लोग तो कुछ पढ़े-लिखे हैं नहीं, ठेकेदार तो बाहर से लाना ही पड़ता था राजा को। हमारे यहाँ के ठेकेदार, कौन-सी जगह है वह, हाँ बिहार, बिहार से आये थे।

उनकी खेती-पाती मुरिया नहीं करते तो कौन करता? अब भी तो पटवारी, गारद सब बाहर से ही आते हैं। अब हम पढ़े ही नहीं तो क्या करेंगे? साहब लोग आयेंगे तो उनका काम तो करना ही पड़ेगा सरकारी हुकुम तो सरकारी हुकुम है। लेकिन उस समय तो अरे, कुछ मत पूछिए। बाबा कहते थे कि किसी से घर का क्या काम है ? उसका खेत खराब हो रहा है, कुछ भी हो रहा हो तो दीवान का हुकुम है तो सब छोड़ कर जाओ। शिकार के लिए दस-दस कौड़ी द्धदो सौऋ आदमी। अरे एक सांबर मिल गया तो उससे साल तो नहीं कटती। अपना पेट तो यही धारती माता ही भरती है।

हाँ, कहते हैं कि यह दीवान महाराज को भी बस्तर के बाहर भेज रहा था। बोड़ा को खबर लगी तो वहीं कोहकामेंटा के पास रास्ता रोक लिया। महाराज पालकी में थे। बोड़ा ने कहा हमें छोड़ कर मत जाओ। दो मुरिया तो वहीं मर गये, पर फिर बोड़ा

भी अपनी पर आ गया, जाने नहीं दिया। दीवान को भी पकड़ लिया और.........और जगदलपुर का घेरा....... न मालूम कौन जासूस खबर भेज दिया। अंग्रेजी फौज आयी इधार उड़ीसा-जयपुर की तरु से बताते हैं कि बड़ा अच्छा साहब था। उनकी फौज बाहर खड़ी रही और बाबा ने राजा से मिलने जाने दिया। बोड़ा ने कह दिया कि हमारी किसी से लड़ाई नहीं है पर हम दीवान को नहीं चाहते हमारे राजा तो अच्छे हैं। अंग्रेज साहब आठ-दस दिन रहे, कोई झगड़ा नहीं हुआ-बहुत मुरियों से बात की। फिर अंग्रेज साहब दीवान को अपने साथ ले गये। बाबा ने भी घेरा तोड़ दिया। सब मुरिया जहाँ के तहाँ चले गये।

प्रश्न और अभ्यास

1. इस पाठ का नाम बेजुबान कितना उचित है? अपने विचार लिखिए।
2. 'हरे रंग का है यह तोता' लेखक को पाठ की यह बात समझ में क्यों नहीं आयी थीं? समूह में चर्चा कर लिखिए।
3. धाान कोई बेचने के लिए होता है। लेखक द्वारा ऐसा कहे जाने के पीछे क्या कारण होंगे? कल्पना करके लिखिए।
4. आमतौर पर सड़कों का विकास अर्थात् पहुँच मार्ग का निर्माण विकास का प्रतीक माना जाता है, किन्तु वे कौन से कारण थे, जिसकी वजह से लेखक को कहना पड़ा है कि 'सड़क क्या आयी' हमारी तो मुसीबत ही आ गयी।
5. आदिवासी संस्कृति में मद्य पीने काचलन है, खुशी मनाने एवे मनोरंजन के लिए वे भी नाचते भी है, पर शहरके लड़कों द्वारा मद्यपान एवं नाचने-गाने को लेखक ने बुरा क्यों कहा हैं?

6. आदिवासियों को विकास के नाम पर उनकी जमीन से बेदखल करना कितना न्यायसंगत है? आपस में विमर्शकर लिखिए।
7. जंगल में आदिवासियों को डर नहीं लगता और बड़े-बड़े ट्रक-मोटरों से शहर वासियों के डर नहीं लगता। ऐसा क्यों है? समूह में चर्चा कर लिखिए।
8. पाठ से उद्‌धृत निम्नांकित पंक्तियों के अंतर्निहित भाव स्पष्ट कीजिए-

   (1) आदमी से डर लगता है जंगल से नहीं।

   (2) 'हम तो यहीं मरेंगे, नहीं हटेंगे।
9. कुछ करने या सोचने के लिए -

   (1) आदिवासियों के रीति-रिवाज, खान-पान, जीवनशैली आदि पर जानकारी एकत्र् कर लिखिए।